शोध मंथन Vol. XIII No.IV Oct.-Dec. 2022 ISSN: (P) 0976-5255 (e) 2454-339X
Available at: *http:/shodhmanthan.anubooks.com*

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में वैश्वीकरण का वृद्धावस्था पर सामाजिक, सांस्कृतिक पक्षीय व विपक्षीय प्रभाव

प्राप्तिः 20.12.2022
स्वीकृतः 26.12.2022

104

दीपमाला उपाध्याय
शोधार्थी
महर्ष दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय
अजमेर (राज०)
प्रवक्ता, समाजशास्त्र विभाग
बगरू, पी०जी० महिला महाविद्यालय, बगरू, जयपुर (राज०)
ईमेलः *deepmala_upadhaya@yahoo.com*

सारांश

वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग आज आम हो गया है किसी भी प्रकार के परिवर्तन को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जा सकता है। विश्व की सिकुड़न, विश्व की एकमतता, नये अर्न्तसम्बंधों का विकास तथा आधुनिकीकरण के नये आयाम आदि स्वरूप को वैश्वीकरण कहा जाता है। मैं अपने प्रस्तुत शोध में वृद्धावस्था और वैश्वीकरण के सम्बन्धों और प्रभावों के बारे में विचार प्रस्तुत कर रही हूँ। वैश्वीकरण वृद्धावस्था के निर्माण में एक प्रभावशाली शक्ति बन गया है। वैश्वीकरण ने हर जगह वृद्ध व्यक्तियों सहित जनसंख्या के सभी वर्गों को प्रभावित किया है। वृद्ध लोगों पर वैश्वीकरण का सकारात्मक व नकारात्मक प्रभाव देखने को मिलते है। आज एक वृद्ध व्यक्ति उसे या खुद को असंवेदशील स्थिति और वैश्वीकरण की मांगों के बीच एक चिपचिपी स्थिति में पाता है।

21वीं सदी के दौरान वृद्ध लोगों के जीवन को आकार देने में वैश्वीकरण निसंदेह एक प्रमुख कारक है। वैश्वीकरण ने वृद्धावस्था के विभिन्न पक्षों को प्रभावित किया है। औद्योगीकरण, शहरीकरण व तकनीकी परिवर्तनों के साथ वृद्ध जनसंख्या प्रभावित हुई है। आज वैश्वीकरण के वृद्धावस्था लाभ की बात करें तो वर्तमान में स्वास्थ्य सेवायें अधिक कुशल हो गई है कई बीमारियों का इलाज घर–घर में उपलब्ध है।

वहीं दूसरी ओर वैश्वीकरण ने भारतीय परिवारों की संरचना में अपरिवर्तनीय परिवर्तन किया है अधिक से अधिक एकल परिवारों के साथ, युवा लोग अपने वृद्ध माता–पिता को रोजगार के अवसरों व बेहतर जीवन स्तर की तलाश में दूर–दूर के स्थानों पर छोड़ देते है। इसके परिणामस्वरूप वृद्ध व्यक्तियों का अलगाव, अस्वीकृति और अकेलापन मनोवैज्ञानिक संकट का कारण बना है।

मुख्य बिन्दु

वैश्वीकरण, वृद्ध, संस्कृति, परिवर्तन, सकारात्मक, नकारात्मक, प्रभाव।

प्रस्तावना

वैश्वीकरण शब्द का प्रयोग आज आम हो गया है किसी भी प्रकार के परिवर्तन को वैश्वीकरण के संदर्भ में देखा जा सकता है। विश्व की सिंकुड़न, विश्व की एकमतता। नये अर्न्तसम्बंधों का विकास

तथा आधुनिकीकरण के नये आयाम आदि स्वरूप को वैश्वीकरण कहा जाता है। मैं अपने प्रस्तुत शोध में वृद्धावस्था और वैश्वीकरण के सम्बन्धों और प्रभावों के बारे में विचार प्रस्तुत कर रही हूँ। वैश्वीकरण वृद्धावस्था के निर्माण में प्रभावशाली शक्ति बन गया है।[1]

वैश्वीकरण एक जटिल अवधारणा है वैश्वीकरण को विश्व की एक मूर्त संरचना की सम्पूर्णता के रूप में देखा जाता है। समाज शास्त्र के अनुसार वैश्वीकरण एक सतत् प्रक्रिया है। जिसमें समाज के आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनैतिक क्षेत्रों में परस्पर परिवर्तन शामिल है। एक प्रक्रिया के रूप में इसने राष्ट्रों, क्षेत्रों, समुदायों और यहाँ तक कि अलग–अलग स्थानों के बीच इन पहलुओं का लगातार बढ़ता एकीकरण शामिल है। सामाजिक रूप से यह वैश्विक प्रसार और विचारों, मूल्यों मानदण्डों, व्यवहारों और जीवन के तरीकों के एकीकरण को संदर्भित करता है।[2]

वर्तमान दौर में पश्चिमीकरण, वैश्वीकरण की प्रक्रियाओं ने सम्पूर्ण विश्व को एक विलेज के रूप में रूपान्तरित कर दिया है। इन प्रक्रियाओं ने समाज की सामाजिक व्यवस्था, आर्थिक व्यवस्था व सांस्कृतिक व्यवस्थाओं को इतना अधिक प्रभावित किया है कि आज विश्व के सम्मुख पहचान का संकट खड़ा हो गया है। इस सम्पूर्ण परिस्थिति ने सामाजिक, सांस्कृतिक जीवन में मूल्यों का संकट उपस्थित कर दिया है।[3]

इन प्रक्रियाओं के फलस्वरूप हर जगह वृद्ध व्यक्तियों सहित जनसंख्या के सभी वर्ग प्रभावित हुए है। जनसंख्या बुढ़ापा एक वैश्विक घटना है। फिर भी व्यापक रूप से स्वीकार किया जाता है। वैश्वीकरण और उम्र बढ़ने के बीच अंर्तसंबंधों पर अभी अपेक्षाकृत कम शोध है। पॉल हिन्स की पुस्तक एजिंग एंड ग्लोबलाइजेशन में वृद्धावस्था व वैश्वीकरण से सम्बन्धित अपने विचार प्रस्तुत किए है।[4]

21वीं सदी के दौरान वृद्ध लोगों के जीवन को आकार देने में वैश्वीकरण निसंदेह एक प्रमुख कारक होगा। यह किस प्रकार के परिवर्तन लाएगा। कुछ मामलों में भविष्यवाणी करना आसान है, दूसरों में बहुत कम वृद्ध लोग निश्चित रूप से एक सांस्कृतिक व सामाजिक रूप से एक विविध दुनिया में रह रहे होंगे। ना केवल अपने स्वयं के समाज के उम्र बढ़ने के बारे में बल्कि दुनिया भर के समुदायों पर उम्र बढ़ने के प्रभाव के बारे में भी जागरूक होंगे।[5]

वृद्धावस्था को पारिभाषित करते हुए McCoy, V. R., Ryan, C. ने अपनी पुस्तक The Adult Cycle में लिखा है ''वृद्धावस्था जीवन की अंतिम अवधि है जब व्यक्ति अपने जीवन का सिंहावलोकन करता है। वर्तमान उपलब्धियों पर जीवित रहता है और अपने जीवन की अन्तिम मंजिल को पूरा करना शुरू कर देता है।''[6]

वैश्वीकरण और वृद्धावस्था पर कुछ अध्ययनों के आधार पर अनेक बातें सामने आई है – द न्यू क्रिटिकल जेरोन्टोलाजी ने इससे सम्बन्धित अनेक मुद्दों पर बात की गई है जैसे वैश्वीकरण और बहुराष्ट्रीय संगठनों और एजेंसियों का वृद्ध लोगों के जीवन पर प्रभाव, दूसरा बाद के जीवन के सामाजिक निर्माण में योगदान करने वाले कारक और तीसरा वृद्धावस्था में विविधता और असमानता से जुड़े मुद्दे जो जीवन पथ पर संचयी लाभ और हानि के प्रभाव से उत्पन्न होते है। इन विषयों का विश्लेषण समाजशास्त्र, सामाजिक नीति, राजनीति विज्ञान और सामाजिक नष्–विज्ञान से विभिन्न दृष्टिकोणों का उपयोग करके किया जाता है।[7]

आज विश्व में वृद्ध जनसंख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। जनसंख्या का वृद्धकरण अर्थात् कुल जनसंख्या में वृद्धों के अनुपात में वृद्धि एक ऐसी जनांकिकीय प्रघटना है जिससे संसार के सभी देश

प्रभावित है। 20वीं शताब्दी के अंत तक वृद्धकरण की प्रक्रिया अतिविकसित देशों जहाँ जनांकिकीय संक्रमण जल्दी शुरू हो गया था। अब यह प्रक्रिया कई विकासशील देशों मुख्य रूप से एशिया और लैटिन अमेरिका में भी फैलना शुरू हो गयी है। जिसका कारण तेजी से घटती हुई प्रजनन दर है। वर्तमान प्रक्षेपित अनुमान के अनुसार वृद्धकरण की प्रक्रिया 21वीं शताब्दी के दौरान लगभग सार्वभौमिक घटना हो जायेगी।

वृद्ध लोग (जिनकी आयु 60 वर्ष या उससे अधिक है) की वैश्विक सहभागिता 1990 में 9.2% जो 2013 में बढ़कर 11.7% हो गयी है। विश्व जनसंख्या में वृद्धि का यह अनुमान निरंतर बढ़ेगा तथा अनुमानतः 2050 तक लगभग 21.1% तक पहुँच जायेगा। (विश्व जनसंख्या रिपोर्ट 2013) इस प्रकार ये वृद्ध जनसंख्या वैश्वीकरण से निरंतर प्रभावित हो रही है। औद्योगीकरण, शहरीकरण और तकनीकी परिवर्तनों के साथ वैश्वीकरण ने हर जगह वृद्ध व्यक्तियों सहित जनसंख्या के सभी वर्गों को प्रभावित किया है। वृद्ध लोगों पर वैश्वीकरण के सकारात्मक व नकारात्मक दोनों प्रभाव देखने को मिलते है।[8]

सकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण का वृद्ध जनसंख्या पर सकारात्मक प्रभाव की बात करें तो आज वह वृद्ध जिसकी पहचान कहीं खोती जा रही थी। वह आज इस दौर में सक्षम होता जा रहा है। एक वृद्ध व्यक्ति के जीवन के सभी पक्ष इस प्रक्रिया से सकारात्मक रूप से प्रभावित होते दिखाई दे रहे है।

1. संचार और यातायात

वैश्वीकरण टेलीफोन आवाज रिकार्ड करने उसे पुनः सुनने की व्यवस्था, रेडियो, टेलीविजन, वीडियो, मोबाईल फोन और अब इंटरनेट के उपयोग ने दुनिया को बहुत छोटा कर दिया है। उपर्युक्त सांस्कृतिक विश्लेषण के प्रसार का बहुत कुछ दायित्व जन संचार के इन्हीं साधनों को जाता है। जन संचार के इन साधनों ने एक वैश्विक मुख्य धारा का निर्माण किया है। जिसका उद्देश्य है सभी मुख्यधारा में लाये जाऐ। मुख्य धारा की जो प्रक्रियाएं है उनसे अभिप्रायः है कि व्यक्तियों के व्यक्तिगत भावनाएँ जाग्रत करना और उन भावनाओं को वैश्विक भावनाओं के साथ जोड़ना।

आज टेलीफोन और मोबाईल सारे विश्व में व्यक्तिगत दूरियाँ कम करने के सर्वोच्च साधनों के रूप में स्वीकार कर लिये जाते है। आज वृद्ध व्यक्ति के लिए ये संचार के साधन चमत्कार से हो गये है। वृद्ध व्यक्तियों के संपर्कों का विस्तार बढ़ने लगा है। प्रेक्षण की नई सुविधाओं के बदौलत विश्व के किसी भी कोने से संपर्क स्थापित किया जा सकता है और संवाद की स्थितियाँ पैदा की जा सकती है।

यदि कोई अपने प्रियजनों से घिरा हुआ है और आर्थिक रूप से स्वतंत्र है तो वृद्धावस्था केवल एक संख्या में कम हो जाती है। संचार प्रौद्योगिकी ने तेजी से विकास की दुनिया को एक छोटी सी जगह बना दिया है। उम्रदराज लोग जो युवाओं के नौकरी के दबाव के कारण अपने बच्चों के साथ रहने के लिये भाग्यशाली नहीं होते है। अब बटन के क्लिक पर उनके साथ आसानी से बातचीत कर सकते है और यहीं नहीं बल्कि आज वैश्वीकरण ने मीलों दूरियों को कम कर दिया है। दिनों का सफर घंटों में तय होने लगा है। जहाँ वृद्ध लोगों का आना जाना आसान सा हो गया है। वैश्वीकरण ने एक बार फिर दिलों को जोड़ दिया हैं और पुरानों को मुस्कुराने की एक नई वजह पेश की है।

2. प्रौद्योगिकी

विदेशों में रहने वाले युवाओं के लिए अब कुछ ही सेकंड में अपने वृद्ध माता पिता को पैसे भेजना संभव हो गया है। यह आर्थिक सहायता न केवल उन्हें अपने खर्चों को अनुग्रह के साथ वहन करने में

मदद करती है बल्कि प्यार को भी बढ़ाती है। यह उन बुजुर्गों में महत्वपूर्ण और वांछित होने की भावना पैदा करने का एक लंबा रास्ता तय करता है जो अन्य या खुद को वंचित और एकांत पाते थे।

3. स्वास्थ्य और देखभाल

वैश्वीकरण का एक पक्ष स्वास्थ्य से जुड़ा है। वैश्वीकरण ने स्वास्थ्य को संस्थाकरण और उसको संगठनात्मक – संरचनात्मक का स्वरूप दिया है। स्वास्थ्य के प्रति तेज गति से चिन्ताओं का विस्तार हुआ है। दो तथ्यों ने इस चिंता को विस्तार दिया। आधुनिक समय में स्वास्थ्य संबंधी कई आविष्कार हुए है और चिकित्सा के क्षेत्र में नई खोजों ने बिना किसी देश की सीमा के उसे सर्वत्र फैला दिया है। अब भी विकसित या अविकसित देशों की नई चिकित्सा प्रणालियाँ कोने–कोने से ली गई है। दूसरी ओर धार्मिक संस्थाओं ने चिकित्सा संस्थाओं को धार्मिक सेवा के रूप में स्वीकार किया है। चिकित्सा का संरचनात्मक संगठनात्मक आधार बढ़ा है। साथ ही विशिष्ट बीमारियों पर वैज्ञानिक शोध का स्तर भी बढ़ा है। परिणाम यह हुआ है कि वैश्विक चिकित्सा व्यवस्था की रचना विकसित हो गई है।

इन्हीं स्वास्थ्य सेवाओं के चलने के फलस्वरूप स्वास्थ्य के वैश्वीकरण का लाभ वृद्धावस्था को भी मिला है। आज वृद्धों के लिये कई बीमारियों का ईलाज अब घर–घर में उपलब्ध है। तकनीकी प्रगति ने कई उपकरणों को आकार दिया है जो उन वृद्ध लोगों की मदद कर सकते है। जो अपने शरीर की स्थिति को कम जानते है। प्रौद्योगिकी चिकित्सा सुविधाओं, जीवन स्तर में सुधार के कारण औसत जीवन प्रत्याशा और स्वास्थ्य में भी वृद्धि हुई है।[9]

नकारात्मक प्रभाव

वैश्वीकरण ने वृद्धावस्था को जहाँ एक ओर सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। वहीं दूसरी ओर इसके नकारात्मक प्रभाव भी देखने को मिलते है।

1. संयुक्त परिवारों के विघटन के दुष्परिणाम

वैश्वीकरण, औद्योगिकरण और शहरीकरण के सम्मिलित प्रभाव से भारत में परिवार की संरचना में अपरिवर्तनीय परिवर्तन आये है। अधिक से अधिक एकल परिवारों के साथ, युवा लोग अपने वृद्ध माता पिता को रोजगार के अवसरों और बेहतर जीवन स्तर की तलाश में दूर–दूर के स्थानों पर छोड़ देते है। इसके परिणामस्वरूप वृद्ध व्यक्तियों का अलगाव अस्वीकृति और अकेलापन मनोवैज्ञानिक संकट का कारण बना है और वृद्ध लोगों के खिलाफ अपराध संयुक्त परिवारों के बिखरने और आधुनिकीकरण के लगातार बढ़ते प्रभाव का नतीजा यह है कि देश में बुजुर्गों की देखभाल एक महत्वपूर्ण मुद्दा बनकर उभरा है।

यह कहना अति श्योक्ति नहीं होगा कि आज परिवार प्रजातंत्र हो गया है। जिसमें प्रत्येक सदस्य का अपना मत है किन्तु बहुमत नहीं होता है पहले परिवार का एक मुखिया होता था। उसकी एक छत्र सत्ता रहती थी किन्तु आज परिवार में केन्द्रीय सत्ता का अभाव है। व्यक्तिगत परिवार तलाक की मान्यता से स्वतंत्रता और मनमानी की ओर उन्मुख है। इस परिवर्तन के पीछे भी वैश्वीकरण का ही दर्शन है।

वैश्वीकरण के प्रभाव से नैतिकता का दायरा सिमट कर रह गया है। पूरी दुनिया भौतिकता की दौड़ में अंधी हो चली है और वैश्वीकरण ने पितृ ऋण की अवधारणा को भी गलत सिद्ध कर दिया है। इस प्रक्रिया ने परिवार के स्वरूप में व्यापक फेरबदल किया है। जिसका प्रभाव वृद्ध लोगों पर नकारात्मक रूप में दिखाई देता है। आज इन वृद्ध लोगों को परिवार और देखभाल की आवश्यकता है। युवाओं के पास माता पिता की देखभाल के लिए समय नहीं है। इससे वृद्धों की हालत और बिगड़ गई है। आज

शहरी क्षेत्रों में इन सारी समस्याओं ने वृद्धाआश्रम की तरफ रूख ले लिया है क्योंकि ये वृद्ध लोग इन वृद्धाआश्रमों के अंदर अपने आपको संतुष्ट व प्रसन्न चित्त मानते है।

2. समायोजन की समस्या

वैश्वीकरण ने वृद्धों के लिए समायोजन की समस्या भी पैदा की है। समायोन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा एक व्यक्ति अथवा समूह अपने भौतिक अथवा सामाजिक पर्यावरण के साथ सामंजस्य पूर्ण तथा स्वस्थ संबंध स्थापित करता है। यह एक समाजशास्त्रीय अवधारणा की अपेक्षा मनोवैज्ञानिक अवधारणा है। वृद्धों की समस्याओं में मुख्य समस्या उनके समायोजन की है। उन्हें परिवार में, समाज में समायोजन करने में दिक्कत आती है। इससे पीढ़ियों के मध्य अंतर भी कहा जाता है। वृद्धों को उनके जमाने के अनुसार व्यवहार, आदतें, रहन–सहन, विचारधारा, पहनावा आदि होता है। वैश्वीकरण ने इन सब में परिवर्तन ला दिया है। इसलिए नयी पीढ़ी इसे दकियानुसी मानती है। ऐसी स्थिति में वृद्धों को उनके मूल रूप में स्वीकार न करने पर उन्हें अपने ही घर में समायोजन की समस्या का सामना करना पड़ता है।[10]

3. अस्पष्ट भूमिकाओं का परिणाम

उम्र बढ़ने के निशान व्यक्ति की भूमिका को एक से दूसरे में बदलते है। पहले के समय में जब कृषि आधारित अर्थव्यवस्था थी। बड़े लोगों की विशेषज्ञता और अनुभव का उपयोग तब किया जाता था जब बच्चे माता पिता के व्यवसाय का पालन करते थे। आर्थिक प्रगति ने जीवन के कई क्षेत्रों में परिवर्तन किया है। बेहतर शिक्षा, शिक्षा के साथ तेजी से तकनीकी परिवर्तन और आधुनिकीकरण ने उनके ज्ञान को अप्रचलित कर दिया है। इसके साथ एक बार जब वे सेवानिवृत्ति के कगार पर होते है तो उन्हें स्पष्ट भूमिका नहीं मिल पाती है। इस अहसास से अकेलापन और अलगाव बढ़ता चला जाता है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वृद्ध व्यक्ति को अकेलापन दिया है। अकेलापन दूसरे व्यक्ति से अलगाव की एक दुःखद भावना है। अकेलेपन की भावनाएं शारीरिक और मानसिक स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है।[11]

निष्कर्ष

वैश्वीकरण वृद्धावस्था के निर्माण में एक प्रभावशाली शक्ति बन गया है। 21वीं सदी के दौरान वृद्ध लोगों के जीवन को आकार देने में वैश्वीकरण निसंदेह एक प्रमुख कारक होगा। आज वैश्वीकरण की इस प्रक्रिया ने एक वृद्ध व उम्र बढ़ने की इस प्रक्रिया को सकारात्मक व नकारात्मक दोनों ही तरह से प्रभावित किया है। वैश्वीकरण ने वृद्धावस्था को एक ओर सरल, सुविधाजनक, आर्थिक आत्मनिर्भर बनाया है। वहीं दूसरी ओर एक वृद्ध व्यक्ति के सामने अनेक समस्याओं को लाकर खड़ा कर दिया है। फिर वह चाहें अलगाव की स्थिति हो या फिर समायोजन की समस्या अर्थात् निष्कर्ष रूप में यही कहा जा सकता है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया ने वृद्धावस्था को सभी प्रकार से प्रभावित किया है।

संदर्भ

1. भार्गव, नरेश. (2014). वैश्वीकरण समाजशास्त्रीय परिप्रेक्ष्य. रावत पब्लिकेशनः जयपुर।
2. गुप्ता, मिथलेश. (2012). भूमण्डलीकरण व सामाजिक परिवर्तन. गौतम बुक डिपोः जयपुर।
3. Alam, Moneer. (2006). Ageing in India. academic foundation: new delhi.
4. (2016). भारत की वृद्ध जनसंख्या पर वैश्वीकरण का प्रभाव. G.K. Today. 31 Oct.
5. Martin, Hyde. (2016). Ageing and Globalisation International Network for Critical Gerontology. Oct.

6. McCoy, V.R., Ryan, C., Lichtenberg, J.W. (1978). The Adult Life Cycle: Training Manual and Reader. United States: Adult Life Resource Center, Division of Continuing Education, University of Kansas.
7. Alan, Walker., Chris, Phillipson., Dale, Dannefer., Jan, Baars. (2016). Aging, Globalization and Inequality: The New Critical Gerontology. United Kingdom: Taylor & Francis.
8. (2013). World Population Report. United Nation: New York. December.
9. Phillipson, Christopher. (2019). Population Ageing and Globlization : The Impact of Cultural and SDocial Change. 25 Feb.
10. Jan, Baars., Dale, Dannerfer., Chris, Phillipson., Alan, Walker. (2006). Ageing, Globlization and Inequality.
11. Anatharam, Ron. (1982). The problems of the older people in a changing society. *Journal of Madras University Liv.* 2. Pg. **31-33.**